ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
# आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

नहिं ते अन्तः शवसः।

ऋग्वेद 1/54/1

हे प्रभो! तेरे बल का अन्त नहीं है।

O the Almighty ! Your might knows no bounds.

वर्ष 39, अंक 34 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 27 जून, 2016 से रविवार 3 जुलाई, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के निर्देशन में

## 15 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

### युवाओं को शारीरिक और आत्मिक रूप से बलवान बनाने की आवश्यकता – स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती

### आर्यसमाज की मजबूती भारत की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करेगी – डॉ. सत्यपाल सिंह

### आर्यवीरों की उन्नति से ही आर्यसमाज और देश का भविष्य सुरक्षित – प्रवेश साहिब वर्मा

### 93 वर्षीय महाशय धर्मपाल जी ने व्यायाम प्रदर्शन करके आर्यवीरों को दी सदैव युवा रहने की प्रेरणा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से सार्वदेशिक आर्य वीरदल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर का समापन एवं दीक्षान्त समारोह एम.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली में 19 जून 2016 को पूर्ण उत्साह व हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। विद्यालय प्रांगण में भव्य मंच सज्जा एवं विशाल पंडाल देखते ही बनता था। 15 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर में देश के विभिन्न राज्यों से 350 आर्यवीरों ने बड़े ही उत्साह के साथ प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया, जिन्हें हरियाणा, उ. प्रदेश, राजस्थान एवं ओड़ीसा से पधारे शिक्षकों ने प्रशिक्षित किया। शिविर संचालन डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

### वरिष्ठ आर्यवीरों – श्री रामनाथ सहगल, श्री एस. एम. गुप्ता एवं श्री वेद प्रकश जी का हुआ सम्मान

शिविर समापन एवं दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी एवं श्री प्रवेश वर्मा जी उपस्थित थे। महाशय धर्मपाल जी (चेयरमैन, एम. डी.एच.) एवं श्री योगेश मुंजाल (चेयरमैन मुंजाल शोवा लिमि.) ने पधार कर कार्यक्रम में चारचांद लगा दिये। समस्त अतिथियों एवं विभिन्न क्षेत्रों से आए आर्य पदाधिकारियों का स्वागत पुष्प मालाओं से किया गया। महाशय धर्मपाल जी द्वारा ध्वजारोहण उपरान्त सामूहिक राष्ट्रीय प्रार्थना की गई। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से समस्त आर्यवीर अध्यापकों को सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया। स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती ने अपने सम्बोधन में कहा कि 'वर्तमान

### युवाओं के वैदिक धर्म में दीक्षित होने से ही आर्यसमाज की उन्नति सम्भव – डॉ. महेश विद्यालंकार

### प्रत्येक प्रान्त में आर्य वीर दल के संगठन को और मजबूत किया जाएगा – प्रकाश आर्य




राष्ट्रीय शिविर के अवसर पर मंचासीन शिविराध्यक्ष डॉ. स्वामी देवव्रत जी साथ में हैं सर्वश्री धर्मपाल आर्य, आचार्य विजयपाल, डॉ. महेश विद्यालंकार, रामनाथ सहगल, देवेन्द्र पाल वर्मा, प्रकाश आर्य, स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, महाशय धर्मपाल, डॉ. सत्यपाल, राजेन्द्र, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती एवं श्री योगेश मुंजाल जी



परेड निरीक्षण करते सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, स्वामी सुमेधानन्द, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य। साथ में हैं वीरेन्द्र आर्य एवं सत्यवीर आर्य।

राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर में देश भर के विभिन्न प्रान्तों से पधारे आर्यवीर दीक्षान्त समारोह के अवसर पर



श्री रामनाथ सहगल जी का सम्मान

श्री सुरेन्द्र मोहन गुप्ता जी का सम्मान

श्री वेद प्रकाश आर्य जी का परिवार के साथ सम्मान

शेष चित्रमय झांकी एवं समाचार पृष्ठ 5 एवं 8 पर

सम्पादकीय

## और कुप्रथा का नाम मान-सम्मान हो गया!

लातूर की रहने वाली मोहिनी ने अचानक इस साल 16 जनवरी को दुपट्टे से फांसी लगाई और मर गई। मोहिनी तो मौत की गोद में सो गयी, किन्तु उसका लिखा सुसाइड नोट जिन्दा लोगों की आत्मा झकझोरने के लिए काफी है। मोहिनी लिखती है कि, ''यह काम सब लोग आत्मा की शांति के लिए करते हैं लेकिन मैं अपनी खुशी से यह कदम उठा रही हूँ। मुझे खुशी होगी कि मैंने दहेज और शादी पर आपके जो रुपए खर्च हो जाते हैं उन्हें बचाया है। आखिर कब तक बेटी वाले बेटे वालों के आगे झुकते रहेंगे? ये प्रश्न जरुर उस समाज के मुंह पर तमाचे जैसा है जो हमेशा दहेज विरोधी होने का दंभ भरता रहता है। कुछ समय पहले तक लगता था जैसे-जैसे समाज शिक्षित होगा तो यह दहेज रूपी कुप्रथा का भी अंत हो जायेगा। किन्तु ऐसा नहीं हुआ और यह कुप्रथा समय के साथ और मजबूत होती चली गयी। आमतौर पर हमारे देश में गाँवों से लेकर शहरों तक सब दहेज विरोधी हैं, जब दहेज विरोध की बात आती है, सब एक सुर में बोलते भी हैं कि दहेज जैसी बीमारी बंद होनी चाहिए। किन्तु जब बात अपने बेटे या बेटी की शादी की आती है तो यह कुप्रथा मान-सम्मान का रूप धारण कर लेती है।

नब्बे के दशक से बड़े स्तर पर दहेज प्रथा के खिलाफ जनजागरण अभियान चलाये गये। बसों, ट्रकों आदि से लेकर दीवारों पर स्लोगन लिखकर लोगों को जागरूक करने का काम किया गया। किन्तु नतीजा ढाक के तीन पात ही रहा और दहेज की आग में बेटियां झुलसती चली गयीं। आखिर दहेज की असली बीमारी छिपी कहाँ है? कहीं लोग सच में तो दहेज लेना-देना पसंद तो नहीं करते हैं? जो यह बीमारी अपनी जगह यथावत खड़ी है। इस बीमारी को फैलाने में मीडिया की दोहरी भूमिका को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। जैसे पिछले दिनों भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाड़ी रविन्द्र जडेजा को उसके ससुर द्वारा एक करोड़ की गाड़ी दिए जाना मीडिया की नजरों में गिफ्ट था। किन्तु यदि कोई मध्यम वर्ग के तबके में इस तरह के लेन-देन हों तो उसे दहेज बताया जाता है। आखिर ऐसा क्यों? सब जानते हैं कि हमेशा छोटा वर्ग अपने से बड़े वर्ग का अनुसरण करता है।यदि बड़ा शिक्षित, संपन्न वर्ग दिखावा करने को या अपने गुणगान को ऐसे कृत्य करेगा तो निश्चित ही छोटा वर्ग उसके पदचिह्नों पर चलेगा।

दूसरा पिछले दिनों लक्ष्मी नगर मेट्रो स्टेशन पर एक लड़की ने ट्रेन के आगे कूदकर इसलिए अपनी जान दे दी थी कि वह जिस लड़के से प्रेम विवाह करना चाहती थी वह लड़का अपनी माँ के कहने पर दहेज में गाड़ी की मांग कर रहा था। गाड़ी देने में लड़की पक्ष असमर्थ हो गया और अंत में लड़की ने आत्महत्या को सरल रास्ता समझा। समझने के लिए काफी है कि दोनों के मध्य उपजे प्रेम सम्बन्ध भी दहेज प्रथा को झुका न सके! आमतौर पर पुरुष समाज को दहेज का लोभी माना जाता रहा है जबकि इसमें एक बड़ी भागीदारी महिला समाज की है। एक सास को दहेज चाहिए, एक ननद, देवरानी, जेठानी सबको दहेज चाहिए। यदि नारी जाति अपने परिवारों में दहेज के खिलाफ खड़ी हो जाये तो हमारा मानना है इस कुप्रथा पर काफी हद तक अंकुश लग सकता है। अलबत्ता ऐसा नहीं है कि आत्महत्या की बढ़ती घटनाओं के लिए सिर्फ दहेज प्रथा ही दोषी है। कई बार गृहस्थ के जीवन में बढ़ रही निराशा, संघर्ष करने की घटती क्षमता और जीने की इच्छाशक्ति की कमी की ओर भी संकेत करती हैं। कुछ दिन पहले हरियाणा फतेहाबाद जिले के भूना कस्बे में दो सगी बहनों ने गोली मारकर आत्महत्या कर ली थी। आत्महत्या करने वाली दोनों सगी बहनें थीं कोमल और शिल्पा। बेहद पढ़ी-लिखी एम.ए., एम. एम.कॉम और पी.एच.डी. होल्डर थीं । लेकिन उनके सुसाइड की जो वजह सामने आई उसे जानकर हर कोई सन्न था। किसी को यकीन नहीं हो रहा क्या ऐसा भी हो सकता है! ''नौकरी नहीं मिली तो जान दे दी!'' दहेज की तरह यह भी कड़वा सत्य है कि कई बार लोग समाज और अपने रिश्तेदारों की अपेक्षाओं पर खरा न उतरने के कारण भी निराशा में आत्महत्या कर लेते हैं। लेकिन इसे हम कुप्रथा नहीं निराशावाद या अच्छे संस्कारो की कमी भी कह सकते हैं।

मौजूदा समय के भौतिकवादी माहौल ने लोगों की महत्वाकांक्षाओं और अपेक्षाओं को काफी बढ़ा दिया है। अधिकांश माता-पिता और रिश्तेदार भौतिक संसाधनों को मान-सम्मान से जोड़ देते हैं। जिन परिवारों की लड़कियों को मनपसंद वर मिलने की चाह पूरी नहीं होती, ससुराल में स्वतन्त्रता के साथ अपेक्षाएं पूरी नहीं होती हैं तो वे युवतियां जिंदगी से ही मायूस होकर खुद को दोषी समझकर आत्महत्या का रास्ता चुन लेती हैं। आज अच्छे वर का मतलब परिवारों और संस्कारों के बजाय पैसे से तोलकर देखा जाने लगा है। मसलन ऐसा समझा जाने लगा है कि यदि मेरी जेब में खूब पैसा है तो मैं अपनी औलाद के लिए किसी को भी खरीद सकता हूँ! जबकि सब जानते हैं जीवन की सच्ची खुशियाँ या पारिवारिक संस्कार पैसों से नहीं खरीदे जा सकते हैं, पैसों से इन्सान तो खरीदे जा सकते हैं किन्तु खुशियाँ नहीं! -*सम्पादक*

**साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक**

वेद-स्वाध्याय

## अमरत्व की घोषणा

**मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघींय आयुः प्रतरं दधानाः।**
**आप्यायमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः।।** -ऋ.10/18/2
ऋषिः **सङ्कुसुमो यामायनः**।। देवता-**मृत्युः**।। छन्दः **त्रिष्टुप्**।।

**शब्दार्थ**- हे मनुष्यो! **यदा**= जब तुम **मृत्योः पदं योपयन्त** := मृत्यु के पैर को ढकेलते हुए **एत**= चलोगे, तो **द्राघीय आयुः प्रतरंदधानाः**= तुम दीर्घ आयु को धारण करने वाले तथा **प्रजया धनेन आप्यायमानाः**= प्रजा और धन से परितृप्त होओगे। इसके लिए **शुद्धाः**= बाहर से **शुद्ध पूताः**= अन्दर से पवित्र और **यज्ञियासः**= यज्ञिय जीवन वाले **भवत**= हो जाओ।

**विनय** - संसार के प्रत्येक प्राणी पर मृत्यु ने पांव रखा हुआ है। जिस दिन उसकी इच्छा होती है उस दिन वह उस पांव को दबाकर प्राणी को कुचल डालती है, समाप्त कर देती है, पर, हे नरतनधारी मनुष्यो! तुममे वह शक्ति है जिससे कि तुम मृत्यु के उस पैर को धकेल कर अमर बन सकते हो। इस संसार में तुम मरे हुओं की तरह न रहकर, न सड़कर, अमर पुत्रों की तरह दृढ़ता से चलो; शुद्ध, पूत और यज्ञिय बन जाओ। ऐसे बनने से तुममें वह आत्मशक्ति जग जाएगी कि तुम उस मृत्यु के पैर को धकेल फेंकोगे। ठीक आहार, व्यायाम, तप आदि द्वारा शरीर को शुद्ध रखो और अन्दर सत्त्वशुद्धि, सौमनस्य आदि लाकर अन्तःकरण को पवित्र रखो; और फिर इस शरीर और मन से यज्ञिय कर्म ही करते जाओ; इससे तुम निःसन्देह अमर निकल आओगे। यह सच है कि यज्ञिय जीवन से मृत्यु मारी जाती है, तब मनुष्य की आयु सौ वर्ष तक चलने वाला यज्ञ हो जाता है, तब वह मनुष्य पूर्ण सौ वर्ष की दीर्घ=विस्तृत आयु को यज्ञरूप में धारण करता है। हम मरे हुए मनुष्य तो आयु को 'धारण' नहीं कर रहे हैं, किन्तु आयु के बोझ को जैसे-जैसे ढो रहे हैं। जब शरीर को आत्मा धारे हुए होता है तो आत्मा शरीर को पूर्ण सौ वर्ष तक स्वस्थ चलने की-जीवन -यज्ञ को सौ वर्ष तक अखण्डित चलने की- आज्ञा देता है और इस जीवन में प्रजा को सृजने द्वारा तथा ध ान के बढ़ाने द्वारा अपनी विकास की इच्छा को परितृप्त करके यज्ञ को पूर्ण करता है। आत्मशक्ति का प्रकाश करने के लिए ही आत्मा शरीर को धारण करता है, अतः शरीर पाकर इस जगत् में कुछ-न-कुछ उपयोगी वस्तु का प्रजनन करना, सृजन (Create) करना तथा जगत् के सच्चे ऐश्वर्य को (धन को) बढ़ा जाना आवश्यक है। संसार में आई सब महान् आत्माएं इस संसार में कुछ-न-कुछ जगत्-हितकारी वस्तु का सृजन करके तथा जगत् में किसी उच्च-से-उच्च ऐश्वर्य को बढ़ाकर जाती हैं। हे मनुष्यों! उठो, मृत्युमय जीवन छोड़ो, शुद्ध, पूत तथा यज्ञिय बनो और मृत्यु के पैर को परे हटाकर अपने अमरत्व की घोषणा कर दो।

**वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 सम्पर्क करें।**

## सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें-

- *सत्यप्रकाश आर्य 9650183335*

बोध कथा

## वरेण्यम्

परमहंस श्री रामकृष्ण जी महाराज जीवन के अन्तिम दिनों में रुग्ण हो गये। गले के अन्दर कैंसर हो गया उन्हें। डॉक्टरों ने चिकित्सा की, पर वे स्वस्थ नहीं हुए। रुग्णता बढ़ती गई। कलकत्ता के प्रसिद्ध विद्वान् दुःखी होकर उनके पास आये; बोले-''डॉक्टर हार गये योगिराज! अब केवल एक ही उपाय है। आप तीन बार कह दीजिये बीमारी दूर हो जाये तो बीमारी चली जायेगी। तीन बार माँ से प्रार्थना कर दीजिये, इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं।''

श्री रामकृष्ण उस समय ठीक प्रकार से बोल नहीं सकते थे। कष्ट से बोले-''शशिधर! माँ से क्या मैं ऐसी बात कहूं? क्या माँ को स्वयं पता नहीं कि मेरे लिए अच्छा क्या है? जो वह उचित समझती हैं, वहीं करती हैं। मैंने उनसे कभी कुछ माँगा नहीं। मैं उनसे कभी कुछ मांगूंगा नहीं।''

यह है सच्चे भक्त की पहचान! वह व्यापार नहीं करता। 'वरेण्यम्' कहकर अपने-आपको ईश्वर के अर्पण कर देता है।

**साभारः बोध कथाएं**

**बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 सम्पर्क करें।**

# कैराना घटना फिर एक घातक षड़यन्त्र का संकेत

– प्रकाश आर्य, मन्त्री,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

शासन और प्रशासन का मुख्य कार्य समाज के मध्य व्यवस्था और सुरक्षा कायम रखना है। इस विचार में जब स्वार्थ बीच में आ जाता है फिर वहां कर्तव्य गौण हो जाते हैं और स्वार्थ सर्वोपरि होता है। भारतवर्ष में ऐसा ही कुछ देखने को मिल रहा है। जहां सत्य का समर्थन करने के पूर्व यह देखा जाता है कि सत्य किस पार्टी के द्वारा अथवा किस व्यक्ति के द्वारा कहा जा रहा है। यदि सत्य उस व्यक्ति के द्वारा जो विरोधी है तो उसका सत्य भी हमें असत्य सिद्ध कर देना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार हो गया है।

वर्तमान राजनीति की स्थिति जन कल्याण की भावना से ऊपर उठकर गुट और कुर्सी तक सीमित रह गई है। प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छ भारत का एक सन्देश दिया, यह स्वच्छता इस देश के रहने वाले हर राजनैतिक दल, साम्प्रदायिक व जातीयता में बंटे हुए व्यक्तियों के लिए, सबके लिए, मानव मात्र के लिए हितकारी है। किन्तु कितने प्रतिशत लोगों ने प्रधानमन्त्री मोदी जी की इस बात को सराहा। सराहना तो ठीक है, इसके विपरीत उसमें गलतियां ढूंढने की पूरी शक्ति से प्रयास करते रहे अर्थात् किसी अच्छी बात का भी यह देश सर्वानुमति से समर्थन नहीं कर सकता, इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है ?

कैराना की घटना ने पुन: इस देश के विशेषकर उन लोगों को जो इस राष्ट्र के चिन्तक हैं, इसके हितैषी हैं उन्हें तथा जो बहुसंख्यक वर्ग की श्रेणी में आते हैं, सोचने के लिए मजबूर कर दिया है। समाज और भारत की अस्मिता पर एक प्रश्न चिह्न उनके समक्ष प्रस्तुत हो गया है। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि पूरा देश समाज विरोधी इस घटना का एक स्वर में विरोध नहीं कर रहा है। इससे बड़ी विडम्बना है कि कुछ न केवल विरोध करते हैं अपितु वोटों की राजनीति और अपनी लोकप्रियता उन लोगों के मध्य बढ़ाने के लिए उनके पापों पर भी आवरण डालते हुए उन्हें बेगुनाह साबित करने के लिए बढ़ चढ़कर बयान दे रहे हैं।

आज हमारे समक्ष कश्मीर, केरल और पूर्वांचल के अनेक प्रान्तों की समस्याएं हैं जहां बाहुबली और हिंसा को शस्त्र बनाकर कुछ लोग अपना प्रभुत्व बढ़ाने में लगे हैं। इस देश से पृथक अपना अस्तित्व बनाने का प्रयास कर रहे हैं। कुछ दिनों पूर्व हैदराबाद के एक अल्प संख्यक नेता ने अपनी कौम के बहु संख्यक होने के कारण सनातन धर्म की कुछ बातों पर प्रतिबन्ध लगाने की बात कर दी थी। भारत से पाकिस्तान का विभाजन इसी प्रकार की साम्प्रदायिक भावनाओं का परिणाम था, कश्मीर से कश्मीरी पण्डितों और सनातनधर्मियों का पलायन भी सम्प्रदायिक भावनाओं का द्योतक हैं। इस प्रकार इस घटना को अनदेखा करना या साधारण रूप में इसे लेना एक नये खतरे को निमन्त्रण देना है।

*–2795, पं. राजगुरु शर्मा मार्ग,*
*इन्दौर रोड, महू (म.प्र.)*

# डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर और अन्ध विश्वास

***.....अन्धविश्वास केवल हिन्दू समाज की मिलकियत नहीं है, संसार का ऐसा कोई भी मत नहीं होगा जिसमें अन्धविश्वास किसी न किसी रूप में नहीं मिलता है। जैसे- ईद के अवसर पर लाखों निरपराध पशुओं को बेवजह मारा जाता है जिससे पर्यावरण को अत्यधिक नुक्सान होता है। डॉ. दाभोलकर चूँकि यह मामला मुस्लिम समाज से सम्बंधित था चुप क्यों रहे। क्या यह मामला अन्धविश्वास से सम्बंधित नहीं था? क्या केवल प्रदूषण गणपति उत्सव पर ही होता है जोकि वर्ष में एक दिन के लिए बनाया जाता है क्या हर रोज लाखों निरीह पशुओं को माँस के लिए बूचड़खानों में नहीं मारा जाता है, उनको मारने के लिए कसाई खानों में लाखों लीटर पानी इस्तेमाल होता है, उससे होने वाला प्रदूषण क्या प्रदूषण नहीं हैं?.....***

स्वर्गीय डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर जी की हत्या किया जाना निश्चित रूप से कायरता का प्रतीक है और हम इसकी खुले रूप से भर्त्सना करते हैं। श्री दाभोलकर अन्धविश्वास उन्मूलन के लिए राज्य सरकार द्वारा कानून बनवाने के लिए पिछले 15 वर्षों से प्रयासरत थे। आप एक ऐसा कानून बनवाना चाहते थे जिससे जादू-टोना, भस्म-भभूत, चमत्कारी शक्तियाँ, अवतारवाद के नाम पर धोखा, ऊपरी छाया, अघोरी द्वारा तंत्र-मंत्र करना, पुत्र प्राप्ति के लिए अनुष्ठान, अभिमंत्रित नगीने, पत्थर आदि, भूत प्रेतादि का मनुष्य के शरीर में प्रवेश, पशुबलि, नरबली, जादूगरी, कुत्ता काटे, साँप काटे का ईलाज, नामर्दी और बांझपन का ईलाज आदि कानूनी रूप से न केवल वर्जित हों अपितु दंडनीय भी हों।

ऊपर से देखने में सभ्य समाज आपको बड़ा बुद्धिजीवी और प्रगतिशील मानकर आपकी इस कार्य में प्रशंसा अवश्य करेगा और आपका इस कार्य में साथ अवश्य देना चाहेगा परन्तु सत्य कुछ और ही है। डॉ. नरेन्द्र ने इस कानून के साथ-साथ कुछ अन्य कार्यों का भी विरोध किया है जैसे होली के पर्व पर आसाराम बापू द्वारा चंद टैंकर पानी को रंग मिला कर इस्तेमाल करना जबकि उस समय महाराष्ट्र में सूखा पड़ा था। जैसे गणपति उत्सव के समय समुद्र में गणेश की मूर्तियों को विसर्जन करने में पर्यावरण को नुकसान होने की बात कहना। पाठक अभी तक सोच रहे होंगे कि ऐसे व्यक्ति का तो अवश्य साथ देना चाहिए मगर यहाँ आप और भी कुछ नहीं देख पा रहे हैं। अन्धविश्वास केवल हिन्दू समाज की मिलकियत नहीं है, संसार का ऐसा कोई भी मत नहीं होगा जिसमें अन्धविश्वास किसी न किसी रूप में नहीं मिलता है। जैसे-

1. ईद के अवसर पर लाखों निरपराध पशुओं को बेवजह मारा जाता है जिससे पर्यावरण को अत्यधिक नुक्सान होता है। डॉ. दाभोलकर चूँकि यह मामला मुस्लिम समाज से सम्बंधित था, चुप क्यों रहे। क्या यह मामला अन्धविश्वास से सम्बंधित नहीं था ?

२. क्या केवल प्रदूषण गणपति उत्सव पर ही होता है जोकि वर्ष में एक दिन के लिए मनाया जाता है क्या हर रोज लाखों निरीह पशुओं को माँस के लिए बूचड़खानों में नहीं मारा जाता है? उनको मारने के लिए कसाई खानों में लाखों लीटर पानी इस्तेमाल होता है, उससे होने वाला प्रदूषण क्या प्रदूषण नहीं हैं? या फिर यह भी मुसलमानों से सम्बंधित होने के कारण यह त्याज्य है।

३. जितनी भी मुसलमानों की दरगाहें, मजारें, कब्रें आदि हैं ,वहाँ पर यह अन्धविश्वास प्रचलित है कि मरे हुए मुर्दे में बीमारियों को ठीक करने की, परीक्षा में अंकों की, बेरोजगारों को नौकरी की, बेऔलादों को औलाद मिलती है। फिर डॉ. नरेन्द्र जी ने देशभर में फैली हजारों कब्रों को उखाड़ने के लिए किसी भी कानून को बनाने के लिए क्यों प्रयास नहीं किया ? क्या कब्र पूजा अन्धविश्वास नहीं है ?

४. ईसाई समाज प्रार्थना से चंगाई होना मानता है अर्थात् किसी भी प्रकार की बीमारी हो, आपको डॉक्टर, दवाई आदि की आवश्यकता नहीं हैं। आप चर्च जायें, प्रभु ईसा मसीह की पूजा करे, उन पर विश्वास रखें। आप चंगे हो जायेगे। जीवन भर बीमार रहने वाली सिस्टर अलफोंसो, अपने जीवन में पार्किन्सन रोग के कारण व्हील चेयर पर अपने अंतिम वर्ष बिताने वाले पूर्व पोप जॉन पॉल द्वितीय, स्वास्थ्य कारणों के कारण अपने कार्यकाल के पूरा होने से पहले अपना त्यागपत्र देने वाले पूर्व पोप बेनेडिक्ट, जीवन में तीन बार अपनी शल्य चिकित्सा करवाने वाली विश्व विख्यात मदर टेरेसा सभी ईसा मसीह पर विश्वास रखते थे। मगर दुआ से ज्यादा दवा पर भरोसा करते थे फिर भी ईसाई समाज प्रार्थना से चंगाई जैसे अन्धविश्वास को प्रोत्साहन दे रहा है। डॉ. नरेन्द्र जी ने कभी ईसाई समाज के इस अन्धविश्वास के विरुद्ध नहीं बोला, क्यों ?

ऐसे अनेक उदाहरण हम सभी मतों में से दे सकते हैं। मगर हमारा उद्देश्य यहाँ पर मतों की निंदा करना नहीं है। अपितु यह सन्देश देना है कि धर्म और अन्धविश्वास में अंतर समझना बेहद आवश्यक है और अन्धविश्वास को तिलांजलि देने के लिए धर्म की तिलांजलि देना आवश्यक नहीं हैं जैसा डॉ. नरेन्द्र जी ने अपने जीवन में किया था।

डॉ. नरेन्द्र जी की अन्धविश्वास विवेचना का समर्थन करने से व्यक्ति नास्तिक बन जाता है जो स्वयं एक प्रकार का अन्ध विश्वास हैं। आस्तिक व्यक्ति अपने से शक्तिशाली ईश्वर की सत्ता को मानने के कारण पाप कर्म को जान बुझ कर नहीं करता और अगर करता भी है तो अज्ञानता के कारण जबकि नास्तिक व्यक्ति के लिए केवल भोगवाद ही जीवन का उद्देश्य रह जाता है इसलिए भोगवाद के गर्त में पड़कर वह एक से बढ़कर एक पाप कर्म करता है। धर्म और अन्धविश्वास में अंतर को समझना आवश्यक है। जब मनुष्य ईश्वर के अनुसार अपने कार्यों को करता है तब वह धर्म का पालन कर रहा होता है और जब मनुष्य अपने अनुसार ईश्वर के कार्यों का निर्धारण करने लगता है तब वह धर्म के स्थान पर अन्धविश्वास का पालन करने लगता है। जिन-जिन अंधविश्वासों का ऊपर वर्णन किया गया हैं या तो वे मनुष्य की अल्पबुद्धि की देन हैं अथवा ईश्वर की आज्ञा का गलत अनुसरण है। जैसे वेदों में पशुओं के साथ भी मित्रों के समान व्यवहार करने का सन्देश है फिर यह कैसे हो सकता है कि वेदों में यज्ञ में पशुबलि का विधान हो। जैसे कुरान में अल्लाह को रहीम अर्थात् दयालु बताया गया है फिर यह कैसे हो सकता है कि वही अल्लाह अपनी इच्छा के लिए ईद के अवसर पर लाखों पशुओं की मृत्यु का कारण बने। यह सब गड़बड़ ईश्वर द्वारा नहीं अपितु मनुष्य द्वारा की गई है। इसका समाधान भी वही है जो महात्मा ज्योतिबा फुले और महादेव गोविन्द राणाडे के मार्गदर्शक, डॉ. अम्बेडकर से आधी सदी पहले अन्धविश्वास और जातिवाद के विरुद्ध उद्घोष करने वाले स्वामी दयानंद सरस्वती ने किया था।

स्वामी दयानंद ने न केवल पाखंड के, अन्धविश्वास के विरुद्ध उद्घोष किया अपितु वेदों में वर्णित सच्चे परमेश्वर की परिभाषा को समाज के कल्याण के लिए पुनर्स्थापित कर समाज को सच्चा आस्तिक भी बनाया था। उनका उद्देश्य मत-मतान्तर के भेद भाव को मिटाकर धर्म की पुन: स्थापना करना था। धर्म की परिभाषा उन्होंने धार्मिक कृत्य न बताकर धैर्य, क्षमा, मन को प्राकृतिक प्रलोभनों में फँसने से रोकना, चोरी त्याग, शौच, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि अथवा ज्ञान, विद्या, सत्य और अक्रोध धर्म के दस लक्षण के रूप में बताया था। मनुष्य के आचरण को सर्वोपरि बताते हुए उन्होंने कहा कि जो पक्षपात रहित न्याय सत्य का ग्रहण, असत्य का सर्वथा परित्याग रूप आचार है उसी का नाम धर्म और उससे विपरीत का अधर्म हैं। धर्म की इस परिभाषा को संसार का कोई भी तटस्थ व्यक्ति अस्वीकार नहीं कर सकता फिर हमें अन्धविश्वास के परित्याग के लिए नास्तिक बनने की क्या आवश्यकता है।

*– डॉ. विवेक आर्य*

# पण्डितों के बिना कश्मीर अधूरा है

घाटी में एक बार फिर राजनीतिक हलचल तेज है। इस बार जम्मू-कश्मीर की सी.एम. महबूबा मुफ्ती ने गांदरबल जिले में तुलमुला के क्षीर भवानी मंदिर में पूजा की। महबूबा के इस कदम को राजनैतिक हलके भले ही पंडितों के बीच पीडीपी की पहुंच को बढ़ाने के तौर पर देख रहे हों किन्तु उनके इस बयान ''पण्डितों के बिना कश्मीर अधूरा है।'' ने विस्थपित कश्मीरी पंडितों के चेहरे पर कुछ पल को ही सही पर मुस्कान जरूर भर दी। हालाँकि इस बयान से अभी उनके विस्थापन का रास्ता साफ नहीं माना जा रहा है, क्योंकि कश्मीर में अलगाववादी गुटों ने कश्मीरी पंडितों को दोबारा कश्मीर में बसाने के सरकार के फैसले का शांतिपूर्ण विरोध करने का फैसला लिया है। सब जानते हैं कि लोकसभा चुनाव और जम्मू कश्मीर विधान सभा चुनाव में बीजेपी ने कश्मीरी पंडितों को वापस घाटी में बसाने का वादा किया था। शायद इसी कारण गठबंधन पीडीपी सरकार केंद्र के सामने लगातार झुकती दिखाई दे रही है।

अधिकारियों का कहना है कि वे वापस आने वाले कश्मीरी पंडितों के लिए सुरक्षित क्षेत्र बनाएंगे जहां वे सुरक्षित रह सकें। लेकिन इस योजना को उस वक्त धक्का पहुंचा जब कई लोगों ने सरकार पर यह आरोप लगाना शुरू किया कि सरकार फिलिस्तीन में इसराइल जैसी व्यवस्था बनाने की कोशिश कर रही है। किन्तु अधिकारियों के लिए सबसे बड़ी समस्या यह पैदा हो गई है कि कश्मीरी अलगाववादी नेता मीरवाइज उमर फारूक, यासीन मलिक और सय्यद अली शाह गिलानी ने सरकार के इस फैसले के खिलाफ हाथ मिला लिए हैं। कश्मीरी पंडित संघर्ष समिति के अध्यक्ष संजय टिक्कू का कहना है कि घाटी छोड़ने वाले 95 फीसदी हिंदुओं ने अपने घर और जमीन बेच दिए है, इसलिए जाहिर है कि वे अपने पुराने घर में तो नहीं लौट सकते हैं; लेकिन मीरवाइज उमर फारूक ने बीबीसी से कहा है कि हम चाहते हैं कश्मीरी पंडित वापस आएं। हर कश्मीरी मुसलमान इस पर सहमत है। हम मानते हैं कि यह एक मानवीय मुद्दा है। पंडितों को वापस आने का हक है और सरकार को उन्हें बसाने के लिए अच्छा मुआवज़ा देना चाहिए लेकिन हम विशेष तरह की व्यवस्था के खिलाफ हैं क्योंकि यह कश्मीरियों में गहरी दरार पैदा करेगा। इस आलोचना के बाद मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने अपने फैसले को लगभग बदलते हुए इस बात पर जोर दिया कि वे कश्मीरी पंडितों को तब तक सिर्फ रहने की जगह मुहैया कराने की बात कर रही है जब तक कि वे अपना घर न तैयार कर लें। लेकिन घाटी में बहुत सारे लोग उनकी इस सफाई से सहमत नहीं हैं।




संजय टिक्कू कहते हैं कि पल भर में हालात नहीं बदल सकते हैं। 2008 में सरकार ने अमरनाथ हिंदू श्राइन बोर्ड को जमीन आवंटित करने का फैसला किया था जिसे लेकर कई दिनों तक घाटी में विरोध-प्रर्दशन होते रहे थे। एक हिंदू के तौर पर यहां मुझे उस वक्त काफी असुरक्षा महसूस हुई थी जब मेरे मुसलमान पड़ोसी मुझे ऐसे देखते थे कि मुझे लगा मैं 1990 के चरमपंथ के दौर में चला गया हूँ। आज घाटी में सिर्फ 2764 हिंदू बचे रह गए हैं जो अपने देश में ही खौफ के साये में जी रहे हैं। आज की पीढ़ी के मुसलमान नौजवानों और पंडितों के बीच उतना जुड़ाव नहीं है। आखिर **कश्मीरी चरमपंथी मुस्लिम युवा कैसे स्वीकार करेंगे कि विस्थापित पंडित इसी घाटी का हिस्सा है, इसलिए हिंदुओं के लौटने की डगर आसान नहीं होगी।**

संजय टिक्कू का मानना है कि घाटी छोड़कर गए लोग अब घाटी में जीवन के दबाव को नहीं झेल पाएंगे और परेशानी आते ही दोबारा से भाग खड़े होंगे। मैं सोचता हूं कि इसका हल एक ऐसे स्मार्ट सिटी को बनाकर निकाला जा सकता है जिसमें पचास फीसदी घर पंडितों के लिए हों और बचे हुए घर मुस्लिम, सिख और दूसरे हर शख्स के लिए हों जो वहां रहना चाहता है। तब जाकर हम यहां एक सच्ची साझा संस्कृति वाले समाज का निर्माण कर पाएंगे। वरना वहां इस माहौल में साझे निर्माण की बात करना बेमानी होगा। आखिर इस हाल में कैसे होगा साझा निर्माण? आज करीब तीन से 4 लाख कश्मीरी पंडित संघर्ष कर रहे हैं। उन्हें नहीं पता कि वे किसके खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं। अपने देश के संविधान के खिलाफ या चरमपंथियों के खिलाफ? क्योंकि यदि अलगाववादी गुटों की बात मान भी ली जाये तो क्या गारंटी है कि मिश्रित आबादी होने से 26 सालों से दिलों में जमी मैल कुछ पल में साफ हो जाएगी, क्या यहां के बहुसंख्यक मुस्लिम ये चाहते हैं कि कश्मीरी पंडित अपने घरों को लौटें? और एक ऐसा माहौल बने कि चिनाब-झेलम के पानी में चरमपंथियों की मजहबी नफरत की आग के बजाय 26 सालों से रिसते घावों को दो ठंडी बूंदें संवेदना की मिल जायें? **–राजीव चौधरी**

### सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर जम्मू में सम्पन्न

## वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के लिए मातृशक्ति का प्रशिक्षण अत्यावश्यक - धर्मपाल आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू व कश्मीर के तत्त्वावधान में 5 से 12 जून 2016 तक नरगिस दत्त मॉन्टेसरी पब्लिक हाई स्कूल, आर. एस. पुरा, जम्मू में सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ जिसमें 14 से 20 वर्षीय आर्यवीरांगनाओं ने भाग लिया। शिविर के समापन समारोह का शुभारम्भ श्री श्याम लाल चौधरी, मंत्री पी.एच.ई. सिंचाई बाढ़ नियंत्रण विभाग जम्मू ने ध्वजारोहण से किया। साध्वी डॉ. उत्तमायति ने अतिथियों का स्वागत करते हुए शिविर के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि लड़कियों को शारीरिक व मानसिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने व जीवन के हर क्षेत्र में उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण और जीवन के नैतिक मूल्यों को समझाने का प्रयास इन शिविरों में किया जाता है। शिविर में भारत के विभिन्न प्रान्तों की लगभग 100 आर्यवीरांगनाओं ने बड़े उत्साह के



साथ भाग लिया। कार्यक्रम में श्री भारत भूषण आर्य वरिष्ठ उपाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू व कश्मीर ने अपने सम्बोधन में कहा कि महर्षि दयानन्द एक महान संत, समाज सुधारक, भारत के एक प्रेरक आदर्श थे। वे महिला सशक्तिकरण के कट्टर समर्थक थे। कार्यक्रम में बी.एस.एफ. 192 बटालियन आर.एस.पुरा के श्री एस.पी.एस. सन्धू ने पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहा - माता ही निर्माता होती है अत: वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के लिए मातृशक्ति का प्रशिक्षण अत्यावश्यक है। कार्यक्रम में श्रीमती मृदुला चौहान, श्रीमती आरती खुराना, श्रीमती विमला मलिक, श्रीमती सुकीर्ति चौधरी, दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान जी ने भी सम्बोधित किया। ज. क. सभा के प्रधान श्री राकेश चौहान ने सभी वीरांगनाओं व कार्यकर्ताओं का धन्यवाद किया। **–भारत भूषण आर्य**

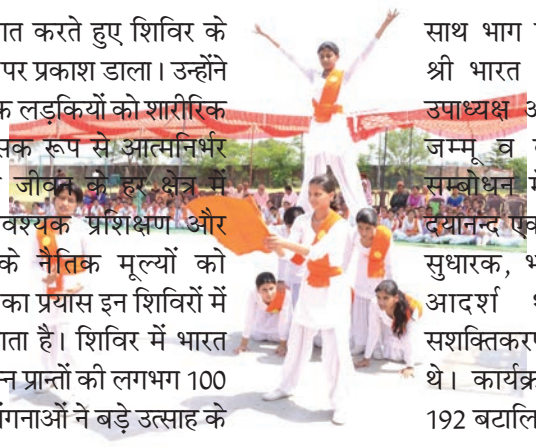

मंचस्थ दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, उप प्रधान श्री शिवकुमार मदान एवं बी.एस.एफ. के पदाधिकारी व आर्य वीरांगनाओं का व्यायाम प्रदर्शन


श्री श्याम लाल चौधरी जी को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए

बी.एस.एफ. के अधिकारियों को सत्यार्थ प्रकाश भेंट करते ज.क. सभा के अधिकारी

बी.एस.एफ. के अधिकारियों को आर्य वीरांगना दल की ओर से स्मृति चिह्न भेंट

श्रेष्ठ आर्य वीरांगनाओं को पुरस्कार वितरण

प्रथम पृष्ठ का शेष

युग में जो परिस्थितियां बनती जा रही है वह देश के भविष्य के लिए अच्छी नहीं हैं।' राजस्थान के कोटा जिले का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि 'कोटा कोचिंग का एक हब बनता जा रहा है जहां आए दिन अनेकों युवा आत्महत्या कर रहे हैं जिसे रोकना बहुत जरूरी है। जो युवा आर्य समाज के नियमों का अनुपालन कर लेता है वह कभी आत्म हत्या नहीं करता। युवाओं को शारीरिक और आत्मिक रूप से बलवान बनाने के लिए आर्य समाज को अपनी बागडोर युवाओं के हाथ में देनी होगी।' मुख्य अतिथि डॉ. सत्यपाल सिंह सांसद ने अपने ओजस्वी भाषण में बतलाया कि, ''सन् 1974 में मैंने भी एक शिविर में भाग लिया था। तब आचार्य जी ने एक दिन मुझसे कहा था कि 'मैं वाणी से भी और बाणों से भी सक्षम हूं यदि मेरे आगे वेद हैं तो पीछे धनुष बाण भी हैं। शक्ति के बिना सत्य की जीत... नहीं होती। जब हमारे पास न सत्य रहा है और न शक्ति रही तभी देश गुलाम हो गया।'' डॉ. सत्यपाल सिंह ने अपने सम्बोधन में आगे कहा कि ''हमारे देश में 65 प्रतिशत युवा हैं जिसने संस्कृत पढ़ी होगी वह युवा कभी आत्म हत्या नहीं करता।'' डॉ. सिंह ने व्यक्तित्व विकास के पांच सूत्र बतलाते हुए कहा कि व्यक्तित्व विकास के पांच सूत्र हैं जिसने इन्हें अपना लिया वह कभी पीछे नहीं रह सकता। ये सूत्र हैं पहला सम्मान उसको मिलता है जिसने स्वच्छ कपड़े पहने हों, दूसरा अपना स्वास्थ्य अपनी तन्दुरुस्ती अच्छी रखो। तीसरा हमारी वाणी में मधुरता होनी चाहिए। चौथा व्यायाम, यदि योगा नहीं कर सकते तो शास्त्रीय नृत्य भी कर सकते हैं। पांचवां सूत्र है विनम्रता, हमारे अन्दर विनम्रता रहनी चाहिए। आज हमें यहां से संकल्प लेकर जाना है कि हमें अपने देश की संस्कृति की रक्षा करनी है।''

क्षेत्रीय सांसद श्री प्रवेश वर्मा जी ने अपने सम्बोधन में कहा, 'आर्यवीरों से देश का भविष्य सुरक्षित है। आर्यसमाज सामाजिक जागृति एवं वैचारिक आन्दोलन का अग्रदूत रहा है। आर्यसमाज के सद्विचारों की प्रेरणा मुझे अपने पिता डॉ. साहिब सिंह वर्मा जी व चौधरी मित्रसेन जी से मिली, आज इन विचारों को सर्वत्र फैलाने की आवश्यकता है।'

श्री प्रकाश आर्य ने कहा कि आर्य वीर दल आर्यसमाज की युवा ईकाई है। इसे और सशक्त करने के लिए प्रत्येक प्रान्त में आर्यवीर दल के संगठन को और मजबूत किया जाएगा।

प्रधान सेनापति डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी ने कहा कि इस वर्ष देश भर में सैंकड़ो प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन हुआ है, जिनमें हजारों आर्यवीरों ने प्रशिक्षण

**राष्ट्रीय शिविर में आर्यवीरों को व्यायाम प्रदर्शन से पूर्व महाशय धर्मपाल जी ने योगासन करके दी युवाओं को सदैव स्वस्थ रहने की प्रेरणा**

**उपस्थित जन समुदाय, आर्यवीरों एवं उपस्थित अतिथियों के सम्मुख राष्ट्रीय शिविर में प्राप्त विद्याओं का प्रदर्शन करते आर्यवीर। इस अवसर पर प्रेरक उद्बोधन देते स्वामी सुमेधानन्द जी, डॉ. सत्यपाल सिंह जी, श्री प्रवेश वर्मा जी, डॉ. महेश विद्यालंकार जी, आचार्य विजयपाल जी एवं श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी**

– शेष पृष्ठ 8 पर

**Continue from last issue :-**

# Glimpses of the SamaVeda

**- Priyavrata Das**

**The Low of the Cow**

With the udder filled with milk, the cow is lowing in her usual way: 'Hamba'. The sound reaches the ears of the calf who immediately runs crying 'ma', 'ma' and pushes her mouth at the udder. The whole day, the mother cow has been away. As the sun in the sky is setting, the fortune of the calf rises. It comes running in speed and stands close to its mother pronoucing om..aum. The sound of 'a' is uttered while opening the mouth leading to 'u' and finally while closing the lips, it merges in the utterance'm'.

The verse says: All sounds of the world are only a reflection of the syllable 'om'. In the sound of the thundering cloud, the silent night or the starry sky, everywhere the sound of 'om' is reflected. The living and the non-living all become active by the nectrar of 'omkar' sound. The inaudible sound of 'omkar' is hidden in every activity of the creation.

The first word emanating out of the lips of the newborm child is 'om' - so simple, yet so deep and meaningful. 'a' stands for God, 'u' stands for Soul and 'm' stands for matter. The hunger of the calf is not for the milk but for the sound of 'om'. It becomes restless and gets excited for that mysterious sound.

तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनव:।
हरिरेति कनिक्रदत्।। (Sv.471)

*Tirsro vaca udirate gavo mimanti dhenavah.*
*harireti kanikradat..*

**The Resplendent Lord**

"O Resplendent Lord, You cleave the dark forces asunder. You set free the fountains of knowledge. You liberate the obstructed stream. You unveil the vast cloud of darkness, and give vent to the showers of blessings, having destroyed wickedness".

"O Supreme Self, You rise above to vitalize the physical forces, and You go deep into the inner realm to shine through the hearts of mankind. You command all the regions of the celestial as well as the spiritual world."

अदर्दरुत्समसृजो वि खानि त्वमर्णवान्बद्बधानां अरम्णा:।
महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद्व: सृजद्वारा अव यद्दानवान्हन्।। (Sv.315)

*Adardarutsamasrjo vi khani tvamarnavanbadvadhanam aramnah.*
*mahantamindra parvatam vi yadvah srjadvara avayaddanavanhan.*

प्रत्यड्. देवानां विश: प्रत्यड्.डुदेषि मानुषान्।
प्रत्यड्. विश्वं स्वर्दृशे।। (Sv.636)

*Pratyan devanam visah pratyannu desi manusan.*
*pratyan visvam svar drse..*

**The Self-radiant**

"In His supreme transcendental glow, all other transient lights fade away like thieves."

"O Self- radiant God, You are all Supreme Light that outstrips all the speed, and it is Your spiritual radiance that awakens each one of us, and shines through the entire firmament".

"It is Your divine light that discriminates between light and darkness for the benefit of all creatures that have birth".

अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभि:।
सूराय विश्वचक्षसे।। (Sv.633)

Apa tye tayavo yatha naksatra yantyaktubhih.
suraya visvacaksase..

तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य।
विश्वमाभासि रोचनम्।। (Sv.635)

*Taranir visva darsato jyotiskrd asi surya.*
*visvam abhasi rocanam..*

उद्द्यामेषि रज: पृथ्वहा मिमानो अक्तुभि:।
पश्यञ्जन्मानि सूर्य।।(Sv.638)

*Ud dyamesi rajah prthvaha mimano aktubhih. Pasyan Janmani surya.*

**To be Conti....**

**प्रेरक प्रसंग**

## संन्यासी की मर्यादा

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज के जीवन की एक प्रेरणाप्रद घटना है। आप एक बार अजमेर गये। प्रो. घीसूलालजी के साथ किसी सामाजिक कार्य के लिए कहीं जा रहे थे। होली के दिन थे। बाजार में शरारती मूर्ख लोगों ने साधु पर रंग डाल दिया।

आप एकदम रुक गये। प्रो. घीसूलालजी से कहा, ''अब वापस चलिए। वस्त्र बदलेंगे। इस पर धब्बे पड़ गये हैं। मैं तो संन्यासी वेश में ही चल सकता हूँ। साधु पर दाग ठीक नहीं।''

श्री महाराज लौट गये। जहाँ ठहरे थे वहीं पहुँचे। उनके पास और वस्त्र थे ही नहीं। कौपीन लगाकर बैठ गये। आर्यपुरुषों ने उनका कुर्ता सिलाया। धोती ली। गेरु रंग करवाया। उन्हें पहना और कार्य पर बाहर निकले। जब तक बिना दाग के भगवे वस्त्र तैयार न हुए वे कौपीन धारण कर अपने पठन-पाठन में लगे रहे, मिलने वाले आर्य पुरुषों से बातचीत करते रहे।

आर्य साधुओं, महात्माओं व नेताओं ने ऐसी मर्यादाएँ स्थापित की हैं और ऐसे इतिहास बनाये हैं।

***साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी***

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

**आओ संस्कृत सीखें**

## संस्कृत पाठ -5

**गतांक से आगे....**

**विभक्ति :** एक बार फिर से आप सबका संस्कृत के एक नए पाठ में स्वागत है। इस पाठ में हम विभक्ति के बारे मे सीखेंगे।

संस्कृत संगीत के समान है। यह भाषा धारा स्वरूप बहती है। संस्कृत भाषा में आप किसी शब्द को वाक्य के अन्दर किसी भी स्थान पर रख सकते हैं, वाक्य का अर्थ नहीं बदलता। उदाहरण के तौर पर-

| संस्कृत | संस्कृत | हिन्दी |
|---|---|---|
| अहं गच्छामि | गच्छामि अहम् | मै जाता हूँ। |
| युवाम् पठथ: | पठथ: युवाम् | तुम दोनों पढ़ते हो। |
| सा वदति | वदति सा | वह बोलती है। |

हमारे ग्रन्थों की तरफ आप ध्यान करें तो सभी किसी न किसी तरह की कविता में बद्ध हैं। किसी शब्द को वाक्य के अन्दर किसी भी जगह पर रखना कविता रचने में बहुत सहायक है। क्रमचयन और संयोजन (Permutation and Combination) की कल्पना कीजिए। कवियों के लिए तो यह आदर्श भाषा हो गई।

अब हम हिन्दी का एक उदाहरण लेकर देखते हैं। नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यान से देखें।

**उदाहरण 1 :** मैं कृष्ण के घर जाता हूँ। जाता कृष्ण घर हूँ मै के। हूँ मैं कृष्ण के जाता घर।

सिवाए 1 के सभी वाक्य अर्थहीन हैं। किसी-किसी वाक्य का तो अर्थ ही बदल जाता है जैसे, निम्नलिखित वाक्यों को देखें-

**उदाहरण 2 :** दशरथ का पुत्र राम है। राम का पुत्र दशरथ है। इसका बहुत छोटा सा कारण है। संज्ञा (Noun) और पूर्वसर्ग (Preposition) अलग-अलग शब्द हैं। अगर हम ऊपर दिए गए राम के उदाहरण में 'दशरथ' और 'का' को मिला दें।

दशरथ का पुत्र राम है। राम पुत्र है दशरथ का। है दशरथ का पुत्र राम। पुत्र है राम दशरथ का।

देखा आपने, पूर्वसर्ग को संज्ञा के साथ मिलाने से वाक्य का मतलब नही बदलता, हम शब्द की जगह के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं। शब्द वाक्य में कही भी प्रयोग किया जा सकता है।

यही संस्कृत में भी किया गया है। संस्कृत में शब्द को पूर्वसर्ग के साथ मिला दिया गया है। फिर से एक बार ऊपर दिए गए उदाहरणों को देखें। **उदाहरण : 1 -**

कृष्णके = कृष्णस्य घर को = गृहं

कृष्णस्य और गृहं संस्कृत की विभक्तियाँ हैं।

| हिन्दी | संस्कृत |
|---|---|
| मै कृष्ण के घर जाता हूँ। | अहं कृष्णस्य गृहं गच्छामि |
| जाता कृष्ण घर हूँ मैं के | गच्छामि कृष्णस्य गृहं अहम् |
| हूँ मैं कृष्ण के जाता घर | अहं कृष्णस्य गच्छामि गृहं |

इन सभी संस्कृत वाक्यों का अर्थ है ''मै कृष्ण के घर जाता हूँ।'' **उदाहरण : 2 -**

राम = राम: दशरथका = दशरथस्य

राम: और दशरथस्य संस्कृत की विभक्तियाँ हैं।

| हिन्दी | संस्कृत |
|---|---|
| दशरथका पुत्र राम है। | दशरथस्य पुत्र राम: अस्ति |
| राम पुत्र है दशरथका। | राम: पुत्र दशरथस्य अस्ति |
| है दशरथका पुत्र राम। | अस्ति दशरथस्य पुत्र राम: |

पुत्र है राम दशरथका। पुत्र अस्ति राम: दशरथस्य

इन सभी संस्कृत वाक्यों का अर्थ है "राम दशरथ का पुत्र है।" तो देखा आपने संस्कृत में आप विभक्तियों की मदद से किसी भी शब्द को किसी भी जगह वाक्य में प्रयोग कर सकते हैं। वाक्य का अर्थ और अभिप्राय नहीं बदलता। हम एक-एक करके इन विभक्तियों के बारे मे पढेंगें। नीचे दिए गए राम (अकारान्त पुंलिङ्ग) की विभक्तियों की तालिका देखिए । इसी प्रकार उकारान्त, इकारान्त, नपुसंकलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग की विभक्तियाँ भी होती हैं। घबराइए नहीं हम एक-एक करके इन विभक्तियों को पढेंगे। राम (अकारान्त पुंलिङ्ग)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | |
|---|---|---|---|---|
| प्रथमा | राम: | रामौ | रामा: | राम (ने) |
| द्वितीया | रामम् | रामौ | रामान् | राम को |
| तृतीया | रामेण | रामाभ्याम् | रामै: | राम के द्वारा, के साथ |
| चतुथी | रामाय | रामाभ्याम् | रामेभ्य: | राम को, के लिए |
| पञ्चमी | रामात् | रामाभ्याम् | रामेभ्य: | राम से, में से, पर से |
| षष्ठी | रामस्य | रामयो: | रामाणाम | राम का, की, क |
| सप्तमी | रामे | रामयो: | रामेषु | राम में, पे, पर |
| सम्बोधन | हे राम! | हे रामौ:! | हे रामा:! | हे राम, अरे, हो, भो: |

***क्रमश:***

***- आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय***

**आचार्य सुनीता शास्त्री जी (रेवाड़ी) का नया मोबाइल नं. 08059016687**

रेवाड़ी(हरियाणा) की वैदिक प्रचारक आचार्य सुनीता शास्त्री जी का मोबाईल नं. बदल गया है। कृपया उनके नए नं. 08059016687 पर ही सम्पर्क करें।

## हिम्मतपुर काकामई में वैदिक महायज्ञ व आर्य सम्मेलन सम्पन्न

आर्य युवा जागृति संस्थान के तत्त्वावधान में 10 जून 2016 को हिम्मतपुर काकामई में आयोजित वैदिक महायज्ञ व आर्य सम्मेलन कार्यक्रम का

शुभारम्भ श्री जय प्रकाश शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ जिसमें वातावरण की शुद्धि के साथ चेचक और खसरा जैसी बीमारियों की वायुमंडल में व्याप्त विषाणुओं को समाप्त करने के लिए औषधियुक्त आहुतियां यज्ञ कुंड में समर्पित की गई। श्री मेधाव्रत शास्त्री ने ओ३म् ध्वजारोहण किया। श्री प्रेम पाल शास्त्री व आचार्य देवराज शास्त्री ने लोगों को आर्य समाज के महत्त्व और उसके उद्देश्यों के बारे में बताया। उन्होंने कहा आर्य समाज कोई धर्म नहीं जीवन जीने की कला है, जो व्यक्ति को ज्ञानवान, शक्तिवान, चरित्रवान बनाने पर जोर देती है। इस मौके पर ग्राम पंचायत हिम्मतपुर काकामई में इस वर्ष मेधावी विद्यार्थियों को आर्य विद्वानों ने पुरस्कृत किया। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानवीर सिंह ने किया।-**विवेक आर्य**

**अभिनंदन** गत दिनों नई दिल्ली के श्री केदारनाथ साहनी सभागार में डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया अमृत महोत्सव अभिनन्दन ग्रंथ का विमोचन किया गया। इस अवसर पर अभिनन्दन गृहमन्त्री श्री राजनाथ सिंह जी साथ में श्री सतीश उपाध्याय एवं श्री वी. के. मल्होत्रा।


**आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा**

**समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित**

**नैतिक शिक्षा की पुस्तकें**

**नर्सरी से 12वीं कक्षा तक**

**आकर्षक छूट 25%**

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001**

☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com


## अम्बेहटी (सहारनपुर) में त्रि दिवसीय उत्सव संपन्न
## ग्राम सभा के प्रधान ने 1 बीघा भूमि मंदिर निर्माण हेतु दान की

उ.प्र. के मुस्लिम बहुल क्षेत्र अम्बेहटी में अनेक वर्षो से आर्यसमाज का संचालन हो रहा है। 10 से 12 जून 2016 तक प्रथम उत्सव का आयोजन शासकीय प्राथमिक विद्यालय में किया गया। भीषण गर्मी के बाद भी दोपहर व रात की सभा में श्रद्धालु बड़ी संख्या में आते थे। कासगंज के पंडित प्रमोद आर्य जी एवं पंडित दिनेशदत्त जी की मधुर आवाज पथिक को पंडाल में बैठने को विवश कर देती थी। आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी के उपदेश वेद व आर्यसमाज की मान्यताओं को सरल शब्दों में स्पष्ट करने के लिए उपलब्ध थे। ग्राम सभा के प्रधान चौ. श्री रघुवीर सिंह जी ने पुरुषार्थी जी के आग्रह पर अपनी व्यक्तिगत 1 बीघा भूमि आर्यसमाज मंदिर के निर्माण हेतु दान करने की घोषणा की। सुखेड़ी ग्राम के ९३ वर्ष के वयोवृद्ध पूज्य स्वामी कर्मवेश जी ने अपनी तरफ से ईंटे दान करने की घोषणा कर दी है।

**सुखवीर धीमान, मन्त्री**

## करो वेद प्रचार जगत में

**आर्य कुमारो! मिलजुल करके, आगे कदम बढ़ाओ।**
**करो वेद-प्रचार जगत में, सोया जगत जगाओ।।**

जगत गुरु ऋषि दयानन्द थे, ईश्वर भक्त निराले।
वेदों के विद्वान धुरन्धर, देश भक्त मतवाले।।
स्पष्टवादी वीर साहसी, बड़े तपस्वी त्यागी।
निर्बल, निर्धन के रक्षक, मानवता के अनुरागी।।

**स्वामी जी से धीर-वीर बन, जग को स्वर्ण बनाओ।**
**करो वेद-प्रचार जगत में, सोया जगत जगाओ।।**

सकल जगत में पाखण्डी, फिरते हैं शोर मचाते।
वेद विरोधी पोंगा पंथी, दुनियां को बहकाते।।
चरित्रहीन बदमाश लफंगे, धर्म गुरु कहलाते।
ईश्वर पूजा छुड़वा दी, खुद को भगवान बताते।।

**पोल-खोल दो मुस्टंडों की, लेखराम बन जाओ।**
**करो वेद-प्रचार जगत में, सोया जगत जगाओ।।**

आसाराम, मुरारी की, चल रही दुकान यहां पर।
घूम रहा सतपाल बना, अब बेईमान यहां पर।।
ब्रह्मकुमारी, सांईदास, झूठा प्रचार रहे कर।
वैदिक पथ को त्याग दिया, ईश्वर का नहीं रहा डर।।

**लूट रहे भोली जनता को, पोपों के गढ़ ढाओ।**
**करो वेद-प्रचार जगत में, सोया जगत जगाओ।।**

अगर न दोगे ध्यान आर्यो। पीछे पछताओगे।
दुनिया में न समझ साथियो! निश्चित कहलाओगे।।
स्वामी श्रद्धानन्द बनो तुम, शुद्धि चक्र चलाओ।
बनो दर्शनानन्द, विश्व में, ओ३म् ध्वजा लहराओ।।

**कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ।**
**करो वेद-प्रचार जगत में, सोया जगत जगाओ।।**

युवक-युवतियां बिगड़ गए, फैशन के हैं दीवाने।
वैदिक पथ को त्याग दिया, गाते हैं गन्दे गाने।।
अण्डेमांस लगे खाने, करते हैं पाप रात-दिन।
गांजा, सुल्फा, मदिरा पी, पाते संताप रात-दिन।।

**'नन्दलाल' नादानों को अब, वैदिक पाठ पढ़ाओ।**
**करो वेद-प्रचार जगत में, सोया जगत जगाओ।।**

*-पं. नन्दलाल निर्भय, सिद्धान्ताचार्य*


**MDH हवन सामग्री**
**मात्र 90/- किलो**
(5,10, 20 किलो की पैकिंग)
**अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी**
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
मो. 09540040339


### मनु संस्कृति संस्थान द्वारा
### आर्यन महिला अभिनन्दन समारोह

आर्य समाज में जो महिलाएं, संन्यासनी, उपदेशिका, भजनोपदेशिका के रूप में स्वतंत्र रूप से कार्य कर रही हैं अथवा जो कन्या गुरुकुलों में आचार्या हैं अथवा अध्यापन का कार्य कर रही हैं अथवा किसी भी रूप में आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ारही हैं। हम उन सभी का अभिनन्दन करेंगे। सम्पूर्ण विवरण, कार्य क्षेत्र, आयु, शिक्षा आदि लिखकर प्रेषित करें। सम्पर्क सूत्र-

*ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट*
*ए-41 लाजपत नगर-2 (निकट मेट्रो स्टेशन), नई दिल्ली-110024,*
*दूरभाष : 011-45791152, 29842527, 9599107207*

### निर्वाचन समाचार

**आर्यसमाज जनकपुरी ए ब्लाक**
**नई दिल्ली-110058**

**प्रधान** : श्री विक्रम नरुला
**मन्त्री** : श्री वीरेन्द्र सरदाना
**कोषाध्यक्ष** : श्री सतीश बजाज

**आर्यसमाज मोलड़बंद विस्तार**
**नई दिल्ली-110044**

**प्रधान** : श्री गजेन्द्र सिंह चौहान
**मन्त्री** : श्री मनोज वर्मा
**कोषाध्यक्ष** : श्री रणजीत सिंह रावत

**आर्यसमाज राम नगर**
**गुड़गांव (हरियाणा)**

**प्रधान** : श्री ओम प्रकाश चुटानी
**मन्त्री** : श्री राधाकृष्ण सोलंकी
**कोषाध्यक्ष** : श्री भगवान दास मनचन्दा


**ओ३म्**

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

**सत्यार्थ प्रकाश**

सत्य के प्रचारार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| ● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 50 रु. | प्रचारार्थ 30 रु. | प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं |
| ● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 80 रु. | प्रचारार्थ 50 रु. | |
| ● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8 | मुद्रित मूल्य 150 रु. | | प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन |

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

**आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट**
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

# साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 27 जून से रविवार 3 जुलाई, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 30जून/1 जुलाई, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 29 जून, 2016


पृष्ठ 5 का शेष

## सार्वदेशिक आर्य वीर दल ...

प्राप्त किया है।

कार्यक्रम में पधारे 90 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के वयोवृद्ध सर्वश्री रामनाथ सहगल जी, श्री सुरेन्द्र मोहन गुप्ता जी एवं श्री वेद प्रकाश आर्य जी को सम्मानित किया गया। अध्यापक श्री नन्द किशोर जी के निर्देशन में प्रशिक्षण प्राप्त शिविरार्थियों का विभिन्न व्यायाम विधाओं का संगीतमय भव्य प्रदर्शन देख सभी ने अपने दांतों तले उंगली दबा ली। छोटे बड़े सभी आर्यवीरों ने एक से बढ़कर एक करतब दिखा कर लोगों को आश्चर्य चकित कर दिया। कार्यक्रम के अन्त में सर्वश्रेष्ठ आर्यवीरों को पुरस्कृत किया गया एवं उन्हें प्रमाण पत्र प्रदान किये गये।

समापन समारोह के अवसर पर परेड निरीक्षण सार्वदेशिक सभा के मन्त्री प्रकाश आर्य एवं सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने किया। विशिष्ट अतिथि के रूप मे श्री योगश मुंजाल जी, आचार्य विजयपाल जी, देवेन्द्र पाल वर्मा जी, सत्यानन्द आर्य जी थे। अतिथि के रूप में श्री सुरेन्द्र रैली, श्री रवि चड्ढा, श्री सुरेन्द्र आर्य, श्री ओम प्रकाश आर्य, श्री शिव कुमार मदान एवं श्रीमती उषाकिरण आर्या जी उपस्थित थीं। इस अवसर पर शिविर में निरन्तर 15 दिनों तक प्रशिक्षण प्रदान करने वाले सर्वश्री समर सिंह, डॉ. ईश्वर आर्य, सत्यव्रत शास्त्री, नन्द किशोर आर्य, समर पाल आर्य, दिनेश आर्य, सत्यम आर्य, भागचन्द आर्य, सुशील आर्य, रुपेन्द्र आर्य, राजकिशोर सिंह, दिनेश आर्य, महावीर आर्य, मोनू आर्य, विजय आर्य, श्याम आर्य, सन्दीप कुमार भारती, सोनू कुमार आर्य, जनेश्वर प्रसाद आर्य एवं व्यवस्थाओं में सहयोगी कार्यकर्ताओं सर्वश्री एस. पी. सिंह, देवेन्द्र आर्य, महेन्द्र सिंह, बृजेश आर्य, वीरेन्द्र आर्य, प्रवीण वाधवा, राकेश आर्य, सन्दीप चतुर्वेदी एवं श्री अनुज आर्य को भी प्रमाण पत्र प्रदान करके सम्मानित किए गए। इस अवसर पर शिविर में धर्माचार्य के रूप में सेवाएं देने वाले श्री आचार्य आनन्द प्रकाश जी को भी प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

शिविर की सफलता के लिए एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल के प्रधान सत्यानन्द आर्य, प्रधानाचार्या श्रीमती अंजली कोहली, अरविन्द नागपाल, जितेन्द्र बनाती, अशोक मेहतानी, योगेश आर्य, जगदीश मेहतानी को स्मृति चिह्न एवं सम्मान पत्र से सम्मानित किया गया।

अन्त में सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने समापन समारोह में उपस्थित सभी आर्यसमाजों, गुरुकुलों, विद्यालयों एवं आर्य संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए समस्त सहयोगियों एवं दानी महानुभावों का धन्यवाद किया। प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

*प्रतिष्ठा में,*

(बाएँ) श्री बृजेश आर्य जी एवं श्री देवेन्द्र आर्य जी को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते सर्वश्री राजेन्द्र लम्बा, प्रकाश आर्य, ओम प्रकाश आर्य एवं श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी। (दाएँ) एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल के अधिकारियों का स्मृति चिह्न एवं सम्मान पत्र द्वारा सम्मान

## स्वास्थ्य चर्चा

## पाचन क्रिया एवं पेचिस का आसान उपचार

बरसात के मौसम में अक्सर पाचन सम्बन्धी दोष उत्पन्न हो जाते हैं। जैसे दस्त न होना या पेचिस की शिकायत हो जाती है। आईए जाने पाचनक्रिया सम्बन्धी कुछ घरेलू उपाय–

1. लौंग, सौंठ, काली मिर्च, पीपल छोटी, अजवायन 10–10 ग्राम कूट–छानकर इसमें सेंधा नमक एक ग्राम मिला लें। इसे स्टील के बर्तन में डालकर दवाई के ऊपर तक नींबू का रस डाल दें। शुष्क होने पर छाया में सुखा लें। 5–5 ग्राम भोजन के बाद प्रात: सायं पानी से दें।

2. गंधक वटी (राजवटी) एक–एक गोली गर्म पानी से भोजन के बाद दोनों समय दें।

3. अजवायन अर्क या पुर्ननवा अर्क या मकोए अर्क एक तिहाई कप में पानी मिलाकर भोजन के बाद दोनों समय दें।

4. पंचसम चूर्ण 3–3 ग्राम पानी से प्रात: सायं दें।

5. जीरकाधारिष्ट 4–4 चम्मच पानी मिलाकर भोजन के बाद दोनों समय दें।

**पेचिस होने पर :** 1. फिटकरी भुनी दो–दो ग्राम प्रात: सायं पानी से लें।

2. अजवायन 20 ग्राम कलौंजी 10 ग्राम पीसकर इसमें से 3 ग्राम दवा दही में मिलाकर प्रात: सायं लें।

3. पांच सुपारी दरदरी कूट तवे पर जलाकर 5 पुड़िया बना लें। एक पुड़िया दही में मिलाकर प्रात: सायं प्रयोग करें।

4. सफेद जीरा 30 ग्राम पीसकर इसमें से 3 ग्राम को दही में मिलाकर प्रात: सायं प्रयोग करें।

5. ईसबगोल की भूसी 5 ग्राम को दही 50 ग्राम में मिलाकर प्रात: सायं लें।

*वैद्य खेम भाई द्वारा रचित ''चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद'' पुस्तक से साभार। यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली -110001 के पते पर भेज सकते हैं।*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह